वनों में नवाचार

-नेहा त्रिपाठी

"चलो बच्चो अब घर चलो, शाम हो रही है।" मम्मी ने दूर से आवाज़ लगाई।

"मम्मी खेलने दो न, अब तो इतनी सर्दियाँ भी नहीं हैं।" राजू ने बैडमिंटन का तेज़ शॉट लगाते हुए जवाब दिया और कॉर्क जाकर पेड़ पर अटक गई। बच्चों ने कहा "लो अब तो घर ही जाना पड़ेगा।"

तभी राजू ने एक पत्थर उठाकर पेड़ की तरफ़ फेंका। उसे लगा शायद ऐसा करने से उसकी कॉर्क ज़मीन पर गिर जाए। लेकिन ऐसा हुआ नहीं। फिर वह वहीं पड़ी कुछ लकड़ियाँ पेड़ की तरफ़ फेंकने लगा। पेड़ की सबसे नीची डाली को खींचने की कोशिश करने लगा। उसे देखकर बाक़ी बच्चों ने भी ऐसा ही करना शुरु कर दिया। तभी बहुत ज़ोर से चीखने की आवाज़ आई। सभी बच्चे डर गए कि ये आवाज़ कहाँ से आई। सभी ने इधर-उधर देखा लेकिन कोई दिखाई नहीं दिया।

तभी दोबारा आवाज़ आई- "मुझे क्यों मार रहे हो। मैंने तुम्हारी कॉर्क नहीं चुराई है। तुमने ख़ुद उसे मेरे पत्तों और टहनियों के बीच में फेंक दिया और वो यहाँ अटक गई।" सभी बच्चे हैरान हो गए। यह पेड़ की आवाज़ थी। लेकिन बच्चों ने अपनी विज्ञान की किताब में पढ़ा था कि पेड़ साँस तो लेते हैं लेकिन बोल नहीं सकते हैं। फिर आवाज़ कैसे आ रही है। बच्चों ने पेड़ के आस-पास देखना शुरु किया। तभी फिर आवाज़ आई, "मैं जादुई पेड़ हूँ। मैं तो तुम्हें साँस

लेने के लिए ऑक्सीजन देता हूँ, फिर तुम मुझे क्यों मार रहे हो।"

तभी मम्मी वहाँ आ गईं और बच्चों को एक बुज़ुर्ग व्यक्ति से मिलवाया जो पेड़ के पीछे छिपकर बच्चों से बातें कर रहे थे। ये बुज़ुर्ग व्यक्ति जंगल में पेड़ों की देखभाल करते हैं। उन्होंने बच्चों को पेड़ पर पत्थर और लकड़ी फेंकते हुए देखा तो पेड़ बनकर बच्चों से बातें करने लगे। बुज़ुर्ग ने बच्चों को बताया कि "पेड़ हमें ऑक्सीजन देते हैं, जो जीवन के लिए बहुत ज़रूरी है, और वे कार्बन डाइऑक्साइड भी अवशोषित करते हैं, जो ग्लोबल वॉर्मिंग को कम करता है।" इसके लिए हमें पेड़ों को धन्यवाद कहना चाहिए।

तभी मम्मी ने बच्चों को 'विश्व वानिकी दिवस' के बारे में बताया। ये दिन हर साल 21 मार्च को मनाया जाता है। इसकी घोषणा 2012 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा की गई थी। अब बच्चे उत्सुकता से उस दिवस के बारे में जानना चाहते थे। बुज़ुर्ग ने समझाया कि ये दिन पेड़ों और जंगलों के महत्त्व को समझने और उनकी रक्षा के लिए मनाया जाता है।

आरव ने पूछा, "लेकिन दादाजी, पेड़ों की रक्षा क्यों जरूरी है?" बुज़ुर्ग ने जवाब दिया, "पेड़ हमारी प्राकृतिक धरोहर हैं। वे वातावरण को संतुलित रखते हैं और अनेक जीव-जंतुओं का घर होते हैं।" सारा ने कहा, "हमें भी पेड़ लगाने चाहिए!" बुज़ुर्ग ने मुस्कुराते हुए कहा, "बिलकुल, और तुम्हें पता है, पेड़ लगाने से सिर्फ़ पर्यावरण की रक्षा ही नहीं होती है, बल्कि ये हमारे स्वास्थ्य के लिए भी अच्छा है।"

नील ने कहा, "तो क्या हम आज पेड़ लगा सकते हैं?" बुज़ुर्ग ने हाँ में सिर हिलाया। उन्होंने बच्चों को पेड़ लगाने की सही तकनीक और पेड़ों की देखभाल कैसे करें, ये भी सिखाया। राजू ने तुरंत दिमाग़ लगाना शुरु किया कि पेड़ लगाकर हम भी वनों के संरक्षण में मदद कर सकते हैं। हम अपने गाँव में छोटे-छोटे बगीचे बना सकते हैं, या फिर स्कूल में पेड़ लगा सकते हैं। इससे हम वनों की अहमियत को और भी ज़्यादा लोगों तक पहुँचा सकते हैं।